ब्रजगजलों का द्वितीय पुष्प

पहला साझा संकलन

ब्रज-गजल

अमरित की धारा बरसैगी

चैन हिये में आवैगौ

अपनी बानी बोल कें देखौ

म्हों मीठौ ह्वै जावैगौ

संकलन एवं प्रस्तुति - नवीन सी चतुर्वेदी (ब्रजगजल प्रवर्तक)

सम्मानित ब्रज-गजल शायर व शायरात

नवीन सी. चतुर्वेदी

उर्मिला माधव

सालिम शुजा अन्सारी

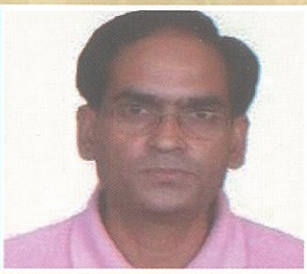

मदनमोहन शर्मा अरविंद

मंगलेश दत्त

अशोक अंजुम

डॉ. पवन कुमार

आर. सी. शर्मा

अशोक अज्ञ

ब्रजभूषण चतुर्वेदी दीपक

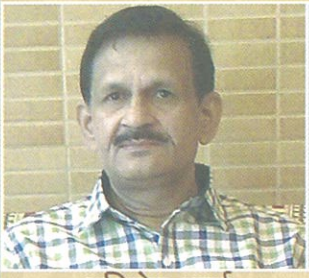

अनिमेष शर्मा

रवि खंडेलवाल

नूतन अगरवाल

ब्रजगजल एक आन्दोलन

ब्रजगजल जैसा कि नाम ही से स्पष्ट है कि ब्रजभाषा में लिखी हुई गजल। गजल के इतिहास पर रौशनी डाले बगैर, गो कि इस पर पूर्व से ही प्रचुर सामग्री उपलब्ध है, हम सीधे ब्रजगजल पर आते हैं। आज की गजल न केवल विषयवस्तु के लिहाज से बल्कि भाषा की दृष्टि से भी काफी समृद्ध हो चुकी है। कभी शराब-शबाब से शुरू हुई शायरी अब नए-नए विचारों और फिकरों की ओढ़नी ओढ़ कर और कमसिन हो रही है। भाषा के लिहाज से भी गजल ने खुद को उर्दू के अलावा न सिर्फ हिन्दी, अंग्रेजी बल्कि अनेक क्षेत्रीय भाषाओं / बोलियों तक भी पहुँचा दिया है। यह आश्चर्यजनक ही है कि आज की गजल सिर्फ उर्दू-फारसी जबान में ही नहीं बल्कि संस्कृत, गढ़वाली, मैथिली, बुन्देली, अवधी, भोजपुरी, गुजराती, मराठी, सिन्धी, पंजाबी, हिमाचली, हरियाणवी, राजस्थानी आदि भाषाओं / बोलियों में भी कही जा रही है। मगर यह भी एक उल्लेखनीय तथ्य है कि कुछ बरस पहले तक ब्रजभाषा में गजल के निशान नहीं मिलते। हो सकता है कि ब्रजभाषा के पास अपनी समृद्ध छन्द-परम्परा होने के कारण लोगों ने इस तरफ रुख न किया हो। ज्ञातव्य है कि ब्रजभाषा के छंदों, पदों, लोकगीतों, रसियाओं का जादू आज भी तमाम लोगों के सर चढ़ कर बोलता है। पुराने शायरों में अमीर खुसरो ने अप्रतिम काम किया है। उन की कह-मुकरियाँ आज भी लोगों की जुबान पर हैं।

वह आवे तब शादी होय।
उस बिन दूजा और न कोय?
मीठे लागें वाके बोल।
ऐ सखि साजन ना सखि ढोल?

जब माँगू तब जल भरि लावे।
मेरे मन की तपन बुझावे?
मन का भारी तन का छोटा।
ऐ सखि साजन ना सखि लोटा?

बेर-बेर सोवतहिं जगावे।
ना जागूँ तो काटे खावे?
व्याकुल हुई मैं हक्की बक्की।
ऐ सखि साजन ना सखि मक्खी?

-अमीर खुसरो

हालाँकि कुछ लोग अमीर खुसरो के 'ज़िहाल-ए मिस्कीं मकुन ब-रंजिश ब हाल-ए-हिज्राँ बेचारा दिल है..सुनाई देती है जिसकी धड़कन हमारा दिल या तुम्हारा दिल है' को भी ब्रजगजल के रूप में देखते हैं। ब्रजगजल का यह आरंभिक रूप ही है जिसमें ब्रजभाषा के आधे-आधे मिसरे और छतियाँ, बतियाँ जैसे काफियों को बड़ी ही खूबसूरती से पिरोया गया है। इस विषय को और गहरे उतर कर देखें तो यह अवश्य कहा जा सकता है कि मुस्लिम शासकों के भारत आने के उपरान्त उर्दू भाषा का विकास अत्यन्त करिश्माई तरीके से हुआ। हिन्दी, हिंदवी, जबाने-देहल्वी, दकिनी से होते हुये यहाँ तक पहुँचने का उर्दू का सफर अत्यन्त दिलचस्प है। उर्दू का प्रारम्भिक रूप निर्धारित करने में सूफी फकीरों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 17 वीं – 18 वीं शताब्दी में उर्दू पर ब्रजभाषा का गहरा प्रभाव पड़ा। कुछ एक विद्वानों, जिन में सन 1833 में जन्मे मुहम्मद हुसैन आजाद का नाम उल्लेखनीय है, ने अपनी किताब आबे-हयात में तो यहाँ तक भी संकेत दिये हैं कि जबाने-उर्दू, ब्रजभाषा की कोख से जन्मी है। ब्रजभाषा वह जो ब्रज क्षेत्र में बोली जाती रही है।

ध्यान रहे कि ब्रज क्षेत्र सिर्फ मथुरा, वृंदावन, गोवर्धन, नंदगांव, गोकुल, बरसाना आदि तक ही सीमित न हो कर बहुत ही व्यापक है। उपलब्ध जानकारी पर दृष्टि डालें तो विद्वानों के अनुसार अपने विशुद्ध रूप में ब्रजभाषा आज भी आगरा, धौलपुर, हिण्डौन सिटी, मथुरा, मैनपुरी, एटा और अलीगढ़ जिलों में बोली जाती है। इसे हम 'केंद्रीय ब्रजभाषा' के नाम से भी पुकार सकते हैं। केंद्रीय ब्रजभाषा क्षेत्र के उत्तर पश्चिम की ओर बुलंदशहर जिले की उत्तरी पट्टी से इसमें खड़ी बोली की लटक आने लगती है। उत्तरी-पूर्वी जिलों अर्थात् बदायूँ और एटा जिलों में इसपर कन्नौजी का प्रभाव प्रारंभ हो जाता है। डॉ. धीरेंद्र वर्मा, 'कन्नौजी' को ब्रजभाषा का

ही एक रूप मानते हैं। दक्षिण की ओर ग्वालियर में पहुँचकर इसमें बुंदेली की झलक आने लगती है। पश्चिम की ओर गुड़गाँव तथा भरतपुर का क्षेत्र राजस्थानी से प्रभावित है। ब्रज भाषा आज के समय में प्राथमिक तौर पर एक ग्रामीण भाषा है, जो कि मथुरा-आगरा केन्द्रित ब्रज क्षेत्र में बोली जाती है। यह मध्य दोआब के मथुरा, आगरा, फिरोजाबाद, मैनपुरी, एटा, हाथरस, बुलंदशहर, गौतम बुद्ध नगर, अलीगढ़, कासगंज जिलों की प्रधान भाषा है। गंगा के पार इसका प्रचार बदायूँ, बरेली होते हुए नैनीताल की तराई, उत्तराखंड के उधमसिंह नगर जिले तक चला गया है। उत्तर प्रदेश के अलावा इस भाषा का प्रचार राजस्थान के भरतपुर, धौलपुर तथा हिण्डौन सिटी जिलों में भी है। यह भाषा करौली जिले के कुछ भाग (हिण्डौन सिटी) के पश्चिम से राजस्थानी की उप-भाषाओं में जाकर मिल जाती है।

हरियाणा में यह दिल्ली के दक्षिणी इलाकों यानि फरीदाबाद जिला और गुड़गाँव और मेवात जिलों के पूर्वी भाग में भी बोली जाती है। तो कम से कम इतना है ब्रजभाषा का व्यापक क्षेत्र। मूल विषय पर लौटते हुये, यह दृष्टिगोचर होता है कि जाहिर है जब दौनों भाषाओं-संस्कृतिओं 'ब्रजभाषा और उर्दू या हिंदवी' का मिलन हुआ तो साहित्य पर भी इसका पारस्परिक गहरा प्रभाव पड़ना ही था। अगर हम यह तलाशें कि सही-सही ब्रजगजल की नींव कब पड़ी होगी तो ऐसा भी लगता है कि एक तरह से अमीर खुसरो से ले कर सूर, मीरा, रहीम, रसखान, बिहारी, मतिराम, केशव, कबीर, वृन्द, ग्वाल, गोविंद, रत्नाकर, घनानन्द, भूषण जैसे सैंकड़ों कवियों की रचनाओं के माध्यम से भले ही सैद्धान्तिक नहीं मगर व्यावहारिक रूप से ब्रजगजल की नींव पड़ गई थी।

मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसें उड़ जहाज कौ पंछी फिर जहाज पै आवै?

-सूरदास

ए री मैं तौ प्रेम दिवानी मेरा दरद न जानें कोय ।

-मीरा बाई

महाकवि बिहारी ने तो अद्वितीय काम किया है :-

कहत, नटत, रीझत, खिझत; मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत है, नैनन ही सों बात?

-बिहारी

कुछ और उदाहरण : -

परसों कौ बिताय दियौ बरसों तरसों कब पाँय पिया परसों?

-भारतेन्दु हरिश्चंद्र

ओछे नर के पेट में, रहै न मोटी बात।
आध-सेर के पात्र में, कैसें सेर समात।।

-वृन्द

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरेउ चटकाय।
टूटे पै फिर ना जुरै, जुरै, गाँठ परि जाय?

-रहीम

धीरें-धीरें रे मना, धीरें सब कछ होय।
माली सींचै सौ घड़ा, ऋतु आएँ फल होय?

-कबीर

जाकी यहाँ चाहना है ताकी वहाँ चाहना है,
जाकी यहाँ चाह ना है ताकी वहाँ चाह ना?

-ग्वाल कवि

तीन बेर खातीं ते वे तीन बेर खाती हैं।

-भूषण

यह अभिमान तौ गवैहैं ना गये हूँ प्रान,
हम उनकी हैं वह प्रीतम हमारे हैं

-जगन्नाथ दास रत्नाकर

जिन लालन चाँह करी इतनी, उनें देखन के अब लाले परे?

-कवि गोविन्द

ऐसे अनगिनत उदाहरण हैं। सूक्ष्मता से अगर देखा जाये तो स्वयं पिंगल-प्रमाणित छांदसिक होने के कारण उपरोक्त पंक्तियाँ / मिसरे काफी कुछ हद तक गजल-छन्द के व्याकरण और मौलिक जरूरतों को पूरी करते नजर आते हैं। विवेच्य काव्य में संबंधित रचनाधर्मियों ने जहाँ एक ओर विशुद्ध ब्रजभाषा के शब्दों से अपनी रचनाओं को सुसज्जित किया है वहीं दूसरी ओर इन लोगों ने मसाहत, दामनगीर, बरामद, मुफलिस, मुसाहिब, दरद, जहाज, दिवानी, फिकर, बादशाह, नूर, होस, जोस, हुशियार, बजार, अकल, सकल, मजूर, हजूर साब, ताब, आम, दाम जैसे अनेकानेक फारसी शब्दों का भी यथायोग्य प्रयोग किया है जो इस बात का प्रतीक है कि उस दौरान ब्रज और फारसी का मिश्रित रूप लोकप्रिय हो रहा था। इन सभी ने किसी न किसी रूप में ब्रज-गजल के लिये जमीन तैयार की। मगर जिसे गजल कहा जा सके वह ब्रजभाषा में कुछ बरस पहले तक देखी / पढ़ी नहीं गई। मुमकिन है कहीं छिटपुट प्रयास हुए हों मगर वह मंजरे-आम पर आ कर उतने मशहूर न हो पाये। अगर सही मायनों में देखें तो ब्रज-गजलों की शुरुआत करने का श्रेय मथुरा में जन्मे और हाल में मुंबई निवासी श्री नवीन चतुर्वेदी को जाता है।

ब्रज-गजलों का सबसे पहला मजमुआ 'पुखराज हबा में उड़ रए एँ' भी मंजरे-आम पर 2015 में ये ही लाये थे। नवीन चतुर्वेदी के बाद और भी शायर इस मुहिम से जुड़े हैं। यह सभी ब्रजभाषा को ब्रज-गजल के माध्यम से राधा कृष्ण, होली, भक्ति, रास आदि से आगे बढ़ कर रोजमर्रा की जिंदगी से जोड़ने की कवायद कर रहे हैं।

1. नवीन चतुर्वेदी, मुंबई द्वारा शुरू किये गये सफर में जो अन्य लोग जुड़े हैं उन के नाम हैं 2. उर्मिला माधव, गाजियाबाद 3.सालिम शुजा अंसारी, फिरोजाबाद 4. मदनमोहन शर्मा, गोकुल 5. मंगलेश दत्त, मुंबई 6. अशोक अंजुम, अलीगढ़ 7. पवन कुमार, मैनपुरी 8.आर.सी. शर्मा आरसी, कोटा 9. अशोक अज्ञ, वृंदावन 10. ब्रजभूषण 'दीपक', वृंदावन 11. अनिमेष शर्मा, दिल्ली 12. रवि खंडेलवाल, इन्दौर एवं 13. नूतन अग्रवाल, आगरा। ब्रजगजलों को प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराने का एक आन्दोलन विगत पाँच वर्षों में प्रभावशाली तारीक से सामने आया है और इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को नवीन चतुर्वेदी ने उठाया है। वे एक आंदोलनकारी की

हैसियत से न केवल खुद लगातार ब्रजभाषा में गजलें कहते रहे हैं बल्कि अन्य शायरों / शायराओं को भी ब्रजगजलें कहने के लिये प्रोत्साहित करते रहे हैं। सरल शब्दों में कहें तो यह कहना ज्यादा मुफीद होगा कि नवीन चतुर्वेदी ब्रजगजलों के सफर को अगली पीढ़ी तक ले जाने का सार्थक प्रयास कर रहे हैं। जहाँ एक तरफ ब्रजभाषा से उन का भावनात्मक लगाव उन्हें ब्रजगजलों की तरफ प्रेरित करता है वहीं उर्दू शायरी का करिश्मा उन्हें ब्रजभाषा को नया ब्लेन्ड देने के लिये आंदोलित करता है।

उल्लेखनीय बात यह है कि नवीन ने लोकप्रिय पोर्टल फेसबुक, ट्विटर, ब्लोगस, रेखता, कविताकोश, साहित्यम, लफ्ज आदि के माध्यम से अपनी कोशिशों को परवान चढ़ाया और मुंबई में बैठे-बैठे ही हिन्दुस्तान के अलग-अलग शहरों के शायरों-शायराओं को अपनी इस मुहिम में जोड़ लिया। सन 2015 में ब्रजभाषा की गजलों का सर्वप्रथम संग्रह 'पुखराज हबा में उड़ रए एँ' लाने का श्रेय भी इन ही को जाता है। इस गजल संग्रह में नवीन ने 52 ब्रजगजलों को प्रस्तुत किया है। इस संग्रह की समीक्षा करते हुये हिंदुस्तान के मशहूर शायर श्री विज्ञान व्रत कहते हैं कि 'पहली बार एक ऐसा गजल-संग्रह देखा जिस में उल्टे पन्ने पर ब्रजभाषा में गजल है और दाएँ पन्ने पर उसी जमीन पर उन्हीं रदीफ काफियों के साथ उसी मफहूम को हिन्दुस्तानी 'उर्दू में पेश किया गया है। इन मायनों में भी यह एक अनूठा काम है।' मशहूर शायर एवं आलोचक मयंक अवस्थी कहते हैं कि 'ब्रजगजल अपने इब्तिदाई रूप में मोहक और आलोड़ित करने वाली प्रतीत हो रही है। ब्रज गजल एक नवीन विचार है और मुमकिन है कि ब्रजभाषा के माधुर्य और गजल की स्वीकार्य बहरों के अरकान के साथ इस का सहज समागम अभिव्यक्ति को एक नया संगीत और नया स्वर उपलब्ध करा दे। इस प्रयास को आगे बढ़ाते हुये नवीन अब तक के कुल 13 ब्रज-गजल के शायरों / शायराओं की ब्रजगजलों का एक साझा-संकलन ले कर आ रहे हैं। यह संकलन प्रेस में है और जल्द ही मंजरे-आम पर होगा। इन 13 शायरों की ब्रज-गजलों से 1-1 शेर :-

गोकुल बारे दूध-दही को,खेल खतम।
माय जसोदा, अब माखन में नाँय कछू॥

(उर्मिला माधव)

म्हों चलावे को बस हुनर आवै।
तोहि तौ बस बकर-बकर आवे।।

(सालिम शुजा अंसारी)

आँसू हू पीने हैं हँसते हू रहनौ है।
यौं समझौ पानी में पत्थर तैराने हैं।।

(मदन मोहन शर्मा 'अरविन्द')

टिफिन में बम, खत'न में बम, बनायौ बालक'न कों बम।
तनिक तौ ध्यान में रखते - खुदा के रूठवे कौ डर?

(मंगलेश दत्त)

होय न सत्यानास जब तलक भारत कौ।
हिन्दू-मुस्लिम करौ लड़ाई जी भरिकै।।

(अशोक अंजुम)

नित्य वसुधा कष्ट कितने सह रही है।
बुद्ध की मुस्कान सब कछ कह रही है।।

(पवन कुमार)

रात भर याद चहलकदमी करै आँगन में।
भोर कूँ दरस दिखाओ तो कछू बात बनै।।

(आरसी)

कैसौ सुंदर सपनौ महलन कौ देखौ।
नैक देर में नींद उचट गयी कहा करैं।।

(अशोक अज्ञ)

पियौ तुमनें हलाहल क्यों अकेलें।
हमें हू संग अपने तुम पिबाते।।

(ब्रजभूषण चतुर्वेदी 'दीपक')

पंचायत की बात मान लै आना कानी चौं कर रौ है।
वा नें जो कर दई सो कर दई तू नादानी चौं कर रौ है।।

(अनिमेष शर्मा)

बीच भँवर में घिर कें टूटे सिगरे चप्पू।
कैसैं पार लगैगी नइया, राम'इ जानैं।।

(रवि खण्डेलवाल)

मैं नें पगडण्डि'न पै चलकें सबकों डगर दिखाई हैं।
तुम जो कहौ तौ चलिवे के ढब हू मैं ही समझाऊँ रे।।

(नूतन अग्रवाल)

अमरित की धारा बरसैगी, चैन हिये में आवैगौ।
अपनी बानी बोल कें देखौ – म्हों मीठौ ह्वै जावैगौ।।

(नवीन सी. चतुर्वेदी)

यह प्रयास ब्रजगजल को स्थापित करने के आन्दोलन की पृष्ठभूमि को तैयार करने की कवायद है जो अगले कुछ बरसों में कामयाब होने की शाहराह पर है। शुक्रिया नवीन जी के हौसलों का, उनके पराक्रम का, उनके जुनून का और उनकी कोशिशों का। दुआ है कि ब्रजगजल आने वाले दिनों में स्थापित हो और अपनी नई पहचान बनाने में कामयाब हो।

-पवन कुमार
-लेखक भारतीय प्रशासनिक सेवा
उ. प्र. संवर्ग के वरिष्ठ अधिकारी हैं.
सम्पर्क – 9412290079

पवन कुमार

सेवा : आईएएस (२००८) उ.प्र. संवर्ग।

कार्य अनुभव : विभिन्न जनपदों में जिला कलेक्टर के पद पर कार्य कर चुके हैं। चंदोली, फर्रुखाबाद, संभल, सहारनपुर व बदायूँ में जिला कलेक्टर के पद पर कार्यरत रहे हैं। सिंचाई, खाद्य-रसद, कृषि तथा सूक्ष्म लघु मध्यम उद्योग विभाग में विशेष सचिव रहे हैं।

अन्य : लेखन कार्य में सतत संलग्न। विविध विषयों पर लेखन कार्य किया है। अब तक ४ पुस्तकें प्रकाशित।

'वाबस्ता' (२०१२) तथा 'आहटें' (२०१७) गजल संग्रह प्रकाशित। 'दस्तक' तथा 'चराग पलकों पर' नामक गजल संग्रहों का संपादन/संकलन।

पत्नी : श्रीमती अंजू सिंह (राज्य प्रशासनिक व वित्त सेवाएं)।

पुरस्कार : १. प्रशासनिक कार्यों में विकास कार्यों तथा सफल निर्वाचन कार्य संपादित किए जाने पर पुरस्कृत, २. 'वाबस्ता' हेतु उ.प्र. सरकार के मैथिलीशरण 'गुप्त' पुरस्कार से सम्मानित, ३. २०१६ के जीशान मकबूल अवार्ड तथा कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' अवार्ड से सम्मानित, ४. सुप्रसिद्ध गायक रूप कुमार राठौर की आवाज में 'वाबस्ता' गजल एलबम रिलीज (२०१६)।

नित्य वसुधा कष्ट कितने सह रही है।
बुद्ध की मुस्कान सब कछ कह रही है।।

शुभ्र-उन्नत-शिष्ट तौ हम है गये, पै।
सभ्यता की नींव पल-पल ढह रही है।।

सोच कें ब्यौहार कीजो बुद्धिमानों।
आपकी सन्तान यै गुन गह रही है।।

आप नें पल भर में सब कछ सीख लीनों?
थाह की तह के हू भीतर तह रही है।।

हम 'पवन' के संग वैसें बह न पाये।
ज्यों हवा के संग दुनिया बह रही है।।

नहीं इक, दसन बार पैदा भयौ है।
खुदइ में खरीदार पैदा भयौ है।।

नयौ जो यै किरदार पैदा भयौ है।
गजब कौ अदाकार पैदा भयौ है।।

यै जो बेच मारै सो थोरौ समझियो।
घरन में जो बाजार पैदा भयौ है।।

हमारी तरफ ध्यान तक है न या कौ।
यै कैसौ तरफदार पैदा भयौ है।।

हिजाब'न सों निकसौ तौ बानक बनैं कछ।
तकल्लुफ सों कब प्यार पैदा भयौ है।।

न या के बिन कहूँ पै हू फबन है।
जहाँ देखौ वहाँ बहती पवन है।।

कबू दीजै न खुद्दारी कों गारी।
तपश्चर्या करी ताकी तपन है।।

अरे मनमीत बरसानें चलौ रे।
लली के धाम सों लागी लगन है।।

जसोमति क्यों न रह-रह कें बिलखती।
अरे सन्तान ही तौ प्राणधन है।।

गुरू नें ही गढ्यौ मेरौ कलेवर।
गुरू के चाक पै माटी, 'पवन' है।।

करेजौ रह गयौ वा बख्त फट कें।
कही जब अलविदा वानें पलट कें।।

मैं धीरज कौन बिधि वा कों बँधातो।
स्वयं बिलखन लग्यौ वासों लिपट कें।।

भरी म्हैफिल में इकले पर गये सब।
कहाँ तक छँट गई है भीर घट कें।।

न कोऊ अक्स बाकी हो न सूरत।
रख्यौ दरपन जबहिं मैं ने उलट कें।।

चिरैया और कहाँ उड़िवे कों जावै।
गगन ही रह गयौ खुद में सिमट कें।।

विरोध'न के पहाड़ अब का बचिंगे।
मुहब्बत की नदी निकसी है कट कें।।

कछ लतीफ'न कों सुनते सुनाते भये।
उम्र गुजरैगी हँसते हँसाते भये।।

अलविदा बोल कें मुस्कुराते भये।
कितने गम दे गयौ मीत जाते भये।।

कुल जमाने कौ ढब ही बदल सौ गयौ।
ह्वै कें निर्लज्ज, परदा हटाते भये।।

लग रहयौ है कि शायद घटें फासले।
और कछ दूरिय'न कों बढ़ाते भये।।

जिन्दगी तू हमारे न पल्लें परी।
उम्र गुजरी भलें सिर खपाते भये।।

स्मृतिन में रही नित्य गंगानदी।
परबत'न में डगर कों बनाते भये।।

चन्द्रमा जो छिपै तौ छिपै शौक सों।
कछ सितारे तौ हैं टिमटिमाते भये।।

भिन्न सौ एक अनुभव कमायौ 'पवन'।
शीश पत्थर के संग आजमाते भये।।

अजब गुलशन कौ मंजर ह्वै गयौ है।
कि इक-इक फूल नश्तर ह्वै गयौ है।।

कहूँ तौ लोग बूँद'न कों तरस'तें।
कहूँ पग-पग समुद्दर ह्वै गयौ है।।

कहूँ चुभ'तै नरम मखमल बदन में।
कहूँ फुटपाथ बिस्तर ह्वै गयौ है।।

हमारे दोसत'न के खेलिवे कों।
हमारौ हीय चौसर ह्वै गयौ है।।

बिना कछ काम के दिनभर भटकनौ।
मुकद्दर कौ मुकद्दर ह्वै गयौ है।।

रसभरी, मीठी जलेबी होय जैसें।
यों लगै जीवन, इमरती होय जैसें।।

मन मुदित जब होय तौ ऐसौ लगै है।
हाथ में बच्चा के कुलफी होय जैसें।।

वे लड़कपन की शरारत का कहें अब।
चटपटी मथुरा की सब्जी होय जैसें।।

छेड़वे पै चौधरी कौ डाँटवौ, वौ।
क्रुद्ध घोड़ा की दुलत्ती होय जैसें।।

बात जो करियो तौ निभ-दब कें ही करियो।
शायरी, प्यारे! 'पवन' की होय जैसें।।

हमन सों तनिक हू न सरमाउ प्यारे।
खिरामा-खिरामा चले आउ प्यारे।।

कहूँ पै अतर तौ कहूँ फूल बन कें।
बिरज की सुगन्ध'न कों बिखराउ प्यारे।।

कला कों कला की तरें मान दीजै।
दरस दिल्लगी के न दरसाउ प्यारे।।

अगर मेघ हौ तौ फरज कों निभाऔ।
बहाने'न की बरखा न बरसाउ प्यारे।।

'पवन' आपकौ बन्धु, बान्धव, सखा है।
'पवन' की अरज कों न ठुकराउ प्यारे।।

आप यै कैसी बात बोलत हौ।
हमकों बैरि'न के संग तोलत हौ।।

भोर तब ही तौ होत है जग में।
जा घड़ी आप नैन खोलत हौ।।

जब उदासी हमें घुमावत है।
आप हू संग-संग डोलत हौ।।

नईं तौ वौ बस्स इक नशा भर है।
भंग में रंग आप घोलत हौ।।

होश गुम होत हैं 'पवन' जब आप।
नेह-उबटन बदन पै रोलत हौ।।

प्रीत-सगाई प्रीतम सों करकें हमनें।
ओज भर्यौ जीवन में बर-बर कें हमनें।।

हम सब मनु के जाये हैं, सुरभित-शोभित।
गन्ध भरी वसुधा में झर-झर कें हमनें।।

कैसौ सुन्दर हो अपनौ वौ नन्दन-वन।
फूँक दियौ झगरे'न में पर-पर कें हमनें।।

असुर'न कौ संख्याबल यों ही नाँय बढौ।
स्वयं बढायौ उनसों डर-डर कें हमनें।।

शुद्ध 'पवन' की भाँति बढायौ बच्च'न कों।
खुद अपने डग पीछें धर-धर कें हमनें।।

नेह सों पूरित नजर है जाय बस।
मातु सरसुति की महर है जाय बस।।

है अगर पीयूष, परचावै प्रभाउ।
है अगर विष तौ असर है जाय बस।।

हाल हैं बेहाल भगत'न के तिरे।
कृष्ण कों इतनी खबर है जाय बस।।

ब्रज गजल हमनें कहीं यै सोच कें।
आत्म-मन्थन कौ जिकर है जाय बस।

कुल जतन या ही लियें तौ हैं 'पवन'।
जग सजग है कें निडर है जाय बस।।